बजरंगबली हनुमान साठिका

तुलसीदासरचित

जय जय जय हनुमान अडंगी । महावीर विक्रम बजरंगी ॥

जय कपीश जय पवन कुमारा । जय जगबन्दन सील अगारा ॥

जय आदित्य अमर अबिकारी । अरि मरदन जय-जय गिरधारी ॥

अंजनि उदर जन्म तुम लीन्हा । जय-जयकार देवतन कीन्हा ॥

बाजे दुन्दुभि गगन गम्भीरा । सुर मन हर्ष असुर मन पीरा ॥

कपि के डर गढ़ लंक सकानी । छूटे बंध देवतन जानी ॥

ऋषि समूह निकट चलि आये । पवन तनय के पद सिर नाये ॥

बार-बार अस्तुति करि नाना । निर्मल नाम धरा हनुमाना ॥

सकल ऋषिन मिलि अस मत ठाना । दीन्ह बताय लाल फल खाना ॥

सुनत बचन कपि मन हर्षाना । रवि रथ उदय लाल फल जाना ॥

रथ समेत कपि कीन्ह अहारा । सूर्य बिना भए अति अंधियारा ॥

विनय तुम्हार करै अकुलाना । तब कपीस की अस्तुति ठाना ॥

सकल लोक वृतान्त सुनावा । चतुरानन तब रवि उगिलावा ॥

कहा बहोरि सुनहु बलसीला । रामचन्द्र करिहैं बहु लीला ॥

तब तुम उन्हकर करेहू सहाई । अबहिं बसहु कानन में जाई ॥

असकहि विधि निजलोक सिधारा । मिले सखा संग पवन कुमारा ॥

खेलैं खेल महा तरु तोरैं । ढेर करैं बहु पर्वत फोरैं ॥

जेहि गिरि चरण देहि कपि धाई । गिरि समेत पातालहिं जाई ॥

कपि सुग्रीव बालि की त्रासा । निरखति रहे राम मगु आसा ॥

मिले राम तहं पवन कुमारा । अति आनन्द सप्रेम दुलारा ॥

मनि मुंदरी रघुपति सों पाई । सीता खोज चले सिरु नाई ॥

सतयोजन जलनिधि विस्तारा । अगम अपार देवतन हारा ॥

जिमि सर गोखुर सरिस कपीसा । लांघि गये कपि कहि जगदीशा ॥

सीता चरण सीस तिन्ह नाये । अजर अमर के आसिस पाये ॥

रहे दनुज उपवन रखवारी । एक से एक महाभट भारी ॥

तिन्हैं मारि पुनि कहेउ कपीसा । दहेउ लंक कोप्यो भुज बीसा ॥

सिया बोध दै पुनि फिर आये । रामचन्द्र के पद सिर नाये।
मेरु उपारि आप छिन माहीं । बांधे सेतु निमिष इक मांहीं ॥

लछमन शक्ति लागी उर जबहीं । राम बुलाय कहा पुनि तबहीं ॥

भवन समेत सुषेन लै आये । तुरत सजीवन को पुनि धाये ॥

मग महं कालनेमि कहं मारा । अमित सुभट निसिचर संहारा ॥

आनि संजीवन गिरि समेता । धरि दीन्हों जहं कृपा निकेता ॥

फनपति केर सोक हरि लीन्हा । वर्षि सुमन सुर जय जय कीन्हा ॥

अहिरावण हरि अनुज समेता । लै गयो तहां पाताल निकेता ॥

जहां रहे देवि अस्थाना । दीन चहै बलि काढ़ि कृपाना ॥

पवनतनय प्रभु कीन गुहारी । कटक समेत निसाचर मारी ॥

रीछ कीसपति सबै बहोरी । राम लषन कीने यक ठोरी ॥

सब देवतन की बन्दि छुड़ाये । सो कीरति मुनि नारद गाये ॥

अछयकुमार दनुज बलवाना । कालकेतु कहं सब जग जाना ॥

कुम्भकरण रावण का भाई । ताहि निपात कीन्ह कपिराई ॥

मेघनाद पर शक्ति मारा । पवन तनय तब सो बरियारा ॥

रहा तनय नारान्तक जाना । पल में हते ताहि हनुमाना ॥

जहं लगि भान दनुज कर पावा । पवन तनय सब मारि नसावा।
जय मारुत सुत जय अनुकूला । नाम कृसानु सोक सम तूला ॥

जहं जीवन के संकट होई । रवि तम सम सो संकट खोई ॥

बन्दि परै सुमिरै हनुमाना । संकट कटै धरै जो ध्याना ॥

जाको बांध बामपद दीन्हा । मारुत सुत व्याकुल बहु कीन्हा ॥

सो भुजबल का कीन कृपाला । अच्छत तुम्हें मोर यह हाला ॥

आरत हरन नाम हनुमाना । सादर सुरपति कीन बखाना ॥

संकट रहै न एक रती को । ध्यान धरै हनुमान जती को ॥

धावहु देखि दीनता मोरी । कहौं पवनसुत जुगकर जोरी ॥

कपिपति बेगि अनुग्रह करहु । आतुर आइ दुसै दुख हरहु ॥

राम सपथ मैं तुमहिं सुनाया । जवन गुहार लाग सिय जाया ॥

यश तुम्हार सकल जग जाना । भव बन्धन भंजन हनुमाना ॥

यह बन्धन कर केतिक बाता । नाम तुम्हार जगत सुखदाता ॥

करौ कृपा जय जय जग स्वामी । बार अनेक नमामि नमामी ॥

भौमवार कर होम विधाना । धूप दीप नैवेद्य सुजाना ॥

मंगल दायक को लौ लावे । सुन नर मुनि वांछित फल पावे ॥

जयति जयति जय जय जग स्वामी । समरथ पुरुष सुअन्तरजामी ॥

अंजनि तनय नाम हनुमाना । सो तुलसी के प्राण समाना ॥

। दोहा ।

जय कपीस सुग्रीव तुम, जय अंगद हनुमान ॥

राम लषन सीता सहित, सदा करो कल्याण ॥

बन्दौं हनुमत नाम यह, भौमवार परमान ॥

ध्यान धरै नर निश्चय, पावै पद कल्याण ॥

जो नित पढ़ै यह साठिका, तुलसी कहैं बिचारि ।
रहै न संकट ताहि को, साक्षी हैं त्रिपुरारि ॥

। सवैया ।

आरत बन पुकारत हौं कपिनाथ सुनो विनती मम भारी ।
अंगद औ नल-नील महाबलि देव सदा बल की बलिहारी ॥

जाम्बवन्त् सुग्रीव पवन-सुत दिबिद मयंद महा भटभारी ।
दुःख दोष हरो तुलसी जन-को श्री द्वादश बीरन की बलिहारी ॥

गोस्वामीतुलसीदासरचित हनुमान साठिका